Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

मेवाड़ महाराणा अमरसिंह प्रथम (1597ई.–1620ई.) का गौरवान्वित शासनकाल व मुगल संघर्ष

माधव लाल अहीर*

* शोधार्थी (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय,गंगरार (चित्तौड़गढ़) भारत

प्रस्तावना – अमर सिंह महाराणा प्रताप एवं महारानी अजबदे पंवार के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनका जन्म चित्तौड़ में 16 मार्च,1559 ई.को हुआ,उसी वर्ष उदयपुर में राजमहलों की नींव उनके पितामह महाराणा उदयसिंह ने सूत्रधार राजा के निर्देशन में रखी थी।कुंवर अमर ने 1580ई. में मुगल सेना को पराजित कर सेनापति अब्दुलरहीम खानखाना की बेगमों को शेरगढ़ से पकड़कर प्रताप के समक्ष पेश किया,जिस पर उन्हें कड़ी फटकार मिली एवं उन्हें अजमेर जाकर उन महिलाओं सहित सम्पूर्ण हरम को खानखाना से क्षमा मांग कर लौटना पड़ा।खानखाना ने उनके इस अहसान और उत्कृष्ट चरित्र को हमेशा याद रखा।इन्होंने 1582ई. के दिवेर युद्ध में मुगल थानेदार सेरिमाखां के ऐसा गहरा भाला मारा कि उसके शरीर में से और कोई इसे निकाल ना पाया,तब करुणाशील प्रताप के आदेश पर मृत्यु के लिए तड़पते सेरिमाखां की छाती पर पैर रखकर अमरसिंह ने ही उसके शरीर से अपना भाला वापस खींचा एवं उस मुगल शत्रु को भी गंगा जल पिलाकर सुखद मृत्यु की ओर उन्मुख किया।

प्रताप के समान राणा अमर ने भी मुगल अकबर द्वार भेजे 1599 ई.व1603 ई. के शाहजादा सलीम सहित 1605ई. के खुसरो के मेवाड़ सैन्य अभियान को असफल किया और हालांकि उनके पास खोने के लिए कुछ भी नहीं था, क्योंकि शुरुआती हमलों में मुगलों ने मेवाड़ के मैदानों पर कब्जा कर लिया था, और वह अपने पिता और पितामह के जैसे ही मुगलों से लड़ते रहे। जब जहांगीर मुगल सिंहासन पर आरूढ़ हुआ तो उसने अमरसिंह के खिलाफ निरंतर कई हमले किए। शायद, वह उसे और मेवाड़ को वश में न कर पाने की अक्षमता के लिए स्वयं को दोषी महसूस करता था, हालांकि उसे(राजकुमार सलीम) यह कार्य करने के लिए अकबर द्वारा दो बार मेवाड़ सैन्य अभियान का नेतृत्व सौंपा गया था। जहाँगीर के लिए, यह बड़ी प्रतिष्ठा की बात बन गई और उसने राणा अमर को वश में करने हेतु 1605ई. में राजकुमार परवेज को अपने साले आसफ खान के साथ मेवाड़ भेजा,परन्तु वे भी असफल रहे।

1600ई.में हुई 'ऊंठाले की लड़ाई' में थानेदार कायमखान सहित मुगल सेनाराणा द्वारा पराजित हुई जिसमें चुण्डावत–शक्तावत योद्धाओं के बलिदान की मुख्य भूमिका रही।राणा ने मुगल मनसबदार महाबत खां,अब्दुल्ला खां,राजा बासु,अजीज कोका इत्यादि के नेतृत्व में भेजे गए मुगल सैन्य अभियानों को भी पराजित किया तब मेवाड़ विजय हेतु स्वयं मुगल शासक जहाँगीर सम्पूर्ण मुगल साम्राज्य के मनसबदारों व विशाल सैन्य को लेकर दिल्ली–आगरा छोड़कर अजमेर आया और वहीं 3 वर्ष तक निवास बनाकर मेवाड़ अभियान का निर्देशन करते हुए 1613 ई. से 1615ई. तक इस मेवाड़ सैन्य अभियान की कमान राजकुमार खुर्रम(शाहजहाँ) को दे दी।

आमेर कच्छवाहा राजा मान सिंह का काका अर्थात् चाचा जगन्नाथ कच्छवाहा का मेवाड़ में मांडल स्थित मुगल शैली में निर्मित मृत्य स्मारकएवं इस पर अंकित शिलालेख(1613ई.) दर्शाता है कि इसने जीवन भर मुगलों की सेवा की और 1576ई. की हल्दीघाटी की लड़ाई में इसने कई मेवाड़ी वीरों को मारा और फिर ये मुगलिया चाकर मनसबदार मेवाड़ के पुर–मांडल परगने में रहा और महाराणा प्रताप से निरंतर लड़ता रहा व उनके विरुद्ध

अकबर के आदेश पर कई सैन्य अभियान किये लेकिन प्रताप की वीरता के सम्मुख ये असफल रहा।राणा अमर सिंह के विश्वसनीय नरसिंह दास शक्तावत (बांसी)द्वारा मैनाल की लड़ाई में इस मुगल मनसबदार जगन्नाथ को यमलोक पहुंचा दिया गया। शक्तावत सिसोदिया सरदारों ने और महाराणा ने अपने बलिदानों का बदला लिया और इसको इस प्रकार मृत्यु के घाट उतारा। इस प्रकार इन कच्छवाहों की तत्कालीन सेना यहां 1576से लेकर 1615ई.तक निरंतर मेवाड़ में कुछ समय को छोड़कर पड़ी रही,संभवत आमेर का मान सिंह टोंक-टोडा के सोलंकी राज्य व यूपी के भदौरिया राज्य की तरह मेवाड़ के इस सिसोदिया गुहिलोत राज्य को भी नष्ट कर के मुगल साम्राज्य की सीमाओं को बढ़ाना चाहता था, मान सिंह आमेर व जगन्नाथ कच्छवाहा के साथ साथ नाथजी (नाथावत कच्छवाहों का मूल पुरुष)और खंगार (खंगारोत कच्छवाहों का मूल पूर्वज पुरुष)भी यहां मांडल-पुर में मुगल परगने मुख्यालय में निवास करते हुए मेवाड़ पर मुगल आक्रमण के मुख्य प्रतिनिधि रहे तब मांडल के युद्ध में मेवाड़ के आक्रमण में मान सिंह आमेर को छोड़कर ये तीनो यही मुगलों के लिए लड़कर मेवाड़ी वीरों द्वारा मारे गए।

अंत में मेवाड़ ने अपने सम्मान को बरकरार रखते हुए मुगलों के साथ 1615ई. की सम्मानजनक संधि कर ली जिसके अनुसार मेवाड़ के महाराणा कभी भी मुगल बादशाह के दरबार में उपस्थित नहीं होंगे अपितु ज्येष्ठ कुंवर दरबार में उपस्थित होंगे। राणा अमर सिंह के उत्तराधिकारी कुंवर कर्ण सिंह को प्रथम श्रेणी का 5000 जात-सवार का मनसब प्रदान करके उच्च प्रतिष्ठा मुगल दरबार में प्रदान की। दूसरी ओर मुगलों ने चित्तौड़ दुर्ग की किलेबंदी को रोककर अपने हितों को साधा ।

राणा अमर मेवाड़ के शासकों में से मुगलों से सर्वाधिक लड़ाइयाँ लड़ने वाले थे जिनके काल तक मेवाड़ी राजपूत सरदारों की चार-चार पीढियां मुगलों के खिलाफ युद्ध में बलिदान हो चुकी थी एवं मेवाड़ी क्षत्राणियों में विधवाओं व महासतियों का बाहुल्य हो गया था।उन्होंने पराक्रम से मुगलों से कई छोटे-मोटे युद्धों के अलावा 17बड़े युद्ध किये और सफलता प्राप्त की,परिणामत:उन्हें राजप्रशस्ति में 'चक्रवीर' पदवी से विभूषित किया।राणा के सामंत रावत मेघ सिंह चुण्डावत(बेगूं) ने 500 मेवाड़ी सैनकों सहित रात्रि में आक्रमण कर हजारों मुगल सेना सहित मुगल सेनापति महाबतखां को पराजित कर मेवाड़ से भगा दिया।मुगल मनसबदार जगन्नाथ कछवाहा,राव खंगार कछवाहा,फरीदुनखान बर्लास,सिकंदर करावल अन्य युद्धों में मेवाड़ी योद्धाओं द्वारा मारे गए।जैतसिंह चुण्डावत,बल्लू शक्तावत,नरहरिदास शक्तावत,रणकपुर मंदिर रक्षक मुकुंददास मेड़तिया,जयमल सांगावत प्रमुख मेवाड़ी यौद्धा बलिदान हुए।

मीरा पूजित ब्रजराज व मुरलीधर की प्रतिमाओं को राणा ने युद्धकाल में भी हमेशा अपने संग रखा जिनमें से ब्रजराज प्रतिमा पंजाब राजा बासु तोमर को भेंट की जिनकी मुगल मनसबदार होते हुए भी मीराजी व राणा के प्रति अगाध श्रद्धा थी।राणा ने मुरलीधर का देवालय उदयपुर में बनवाया।सायरा गाँव बसाने वाले राणा का प्रिय हाथी आलमगुमान था।

मेवाड़ के महाराणाओं में सबसे ऊँचे व बलिष्ठ राणा अमर का निधन 26 जनवरी, 1620ई.को हुआ। महासतियाँ आहड़ में पहली छतरी राणा अमर की ही है। राणा ने 1615 की मेवाड़-मुगल संधि के बाद सारा राजकाज अपने पुत्र कर्ण सिंह के हाथों में दे दिया व उनके जीवन के अंतिम पांच साल उन्होंने आहड़ महासतियाँ प्रांगण में एक निवृत राणा के रूप में भगवत आराधना में गुजारे।

अब्दुल रहीम खानखाना द्वारा अमर सिंह को भेजा गया लिखित पद्य-

धरा रहसी,रहसी धरम,खपजासी खुरसाण ।
अमर विशम्भर उपरे,राखो नहचो राण ।।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. गौरीशंकर हीराचंद ओझा,उदयपुर राज्य का इतिहास,पृ.409-435,राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर,2022
2. मांडल गाँव में स्थित जगन्नाथ कछवाहा की छतरी पर अंकित शिलालेख
3. कविराज श्यामलदास,वीर विनोद,भाग-2,पृ.230-239,महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट एवं राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर,2017
4. राजेन्द्र शंकर भट्ट,मेवाड़ के महाराणा और शहंशाह अकबर,पृ.367-378,पंचशील प्रकाशन जयपुर,1997 ई.।
5. मांडल के पाराशर परिवार के बुजुर्गों का साक्षात्कार, महेशजी पराशर सहित ।
6. श्रोत्रिय,कृष्ण चन्द्र, आशिया, ईसरदान,चुण्डावत,स्वरुप सिंह, शक्तावत, देवेन्द्र सिंह,राठौड़,देवकरण सिंह(सं.) 1987। सगत रासो। उदयपुर : प्रताप शोध प्रतिष्ठान।

****